© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 02 | April - June 2023

राव तुलाराम का 1857 की क्रांति के बाद का जीवन : एक अध्ययन

Ravi Dutt, Research Scholar
Supervisor : Dr Yasir Bashir

सार : राव तुलाराम सेना की नसीबपुर युद्व में हार के बाद उनका जीवन बहुत ही कठिन और चुनौतीपूर्ण रहा। उन्हे उम्मीद थी कि वे बहुत जल्दी दोबारा एक मजबूत सेना बनाकर अंग्रेजों को भारत से भागने के लिए प्रयाश करेगें। इसके लिए उन्होने आस पास रियासतों सहित अन्य देशों से भी मदद मांगी लेकिन वह अपने अधूरे सपनों के साथ ही दुनिया से अलविदा हो गए।

राव तुलाराम 1857 की क्राति मे असफल होने के बाद मदद की आश से डरौली होते हुए मालसिसार नामक गांव में पहुंच गए। यहां के मुखिया ने राव तुलाराम की पुरी मदद की।[1] कुछ समय बाद अंग्रेजी सेनां से लोहा लेने के लिए जोधपुर की सेना शेखावती क्षेत्रों पहुंच गई तो राव तुलाराम बिना किसी देरी के जोधपुर की सेना में शामिल हो गए। उसके बाद राव तुलाराम और सेना के बीच की गतिविधियों पर इतिहास मौन है। ब्रिटिश दस्तावेजों में स्पष्ट लिखा गया है कि राव तुलाराम के जोधपुर सेना में मिलने के बाद की गतिविधियां पता नही लगाई जा सकी।[2]

उसके बाद राव तुलाराम बीकानेर के महाराजा के पास चले गए लेकिन बीकानेर महाराज ने मदद की बजाए बीकानेर राज्य छोडने को कहा गया।[3] उसके बाद वे जैसलमेर पहुंच गए। यहां वे काल्पनिक नाम दांगली गोसाईं के रुप में एक अन्य व्यापारी जैथमल साहुकार के साथ साझेदारी में व्यापार किया। वह जैसलमेर के महाराज से भी मिलें और दोनो के मध्य कुछ बातचीत भी हुई।[4]

राव तुलाराम यहा ज्यादा दिन नही रुके क्योकि उन्हे पता था कि अंग्रेजों का गुप्तचर विभाग लगातार उनका पिछा कर रहा है। जिसके कारण वह ई0 1858 के प्रारम्भ में जोधपुर पहुंच गए। लेकिन यहा के प्रमुख राजा तख्त सिंह ने अंग्रेजों के भय से राव तुलाराम की किसी भी तरह की मदद करने की बजाए उन्हे तुरन्त राज्य छोड देने का आदेश दिया गया।[5]

उसके बाद राव तुलाराम अपने सहयोगी हरसाईं, तारा सिंह सहित कोटा–बुंदी चले गए। लेकिन यहां के हाडा राजकुमारों ने भी अन्यों की तरह मदद करने से इन्कार कर दिया।[6]

---

1 यादव इतिहास, स्वामी सुधानन्द योगी, , पटौदी, हरियाणा, 1989, पेज न0 338
2 फाईल आर/180, पंजाब राज्य अभिलेखागार, पेज न0 49
3 1857 के नायक, पूर्वोद्वत ,पेज न0 43
4 आभीर कुलदीपीका, राव मान सिंह, दिल्ली, 1900, पेज न0 136
5 वही
1857 के नायक, पूर्वोद्वत ,पेज न0 43
6 आभीर कुलदीपीका, पूर्वोद्वत, पेज न0 136

राजपुताना के बाद राव तुला राम ई0 1858 के शुरुआती महीनों में ही कालपी[7] पहुंचे। यहा नाना साहब ने उनका जोरदार स्वागत किया। साथ में उनके लिए एक बहुत बडा बंगला दे दिया गया। उनकी सुरक्षा के लिए कुछ सिपाई तैनात कर दिए गए।[8]

राव तुलाराम यहां तांत्या टोपे और फिरोज के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ षडयंत्र रचते रहे।[9] लेकिन जैसे ही सरकार को इन सब बातों की जानकारी मिली तो तुरन्त दिल्ली मंडल के आयुक्त सी0 बी0 सांडर्स ने 31 जनवरी 1859 को गुडगांव के उपायुक्त विलियम फोर्ड को एक पत्र के माध्यम से तुला राम, तांत्या टोपे और फिरोज की सैन्य गतिविधियों की जानकारी दी।[10] दिनांक 07 अप्रैल 1859 को अंग्रेजी सेना द्वारा तांत्या टोपे को गिरफतार कर लिया गया। एक सैन्य अदालत में मुकदमा चलाकर उन्हे फांसी दे दी गई।[11]

तांत्या टोपे की मृत्यु के साथ ही भारत में 1857 का विद्रोह शांत हो गया। अब राव तुलाराम अंग्रेजों के खिलाफ भारतीय रियासतों से किसी भी प्रकार की सहायता की आस ना देखकर अन्य देशो का समर्थन प्राप्त करने का फैसला किया।[12]

राव तुलाराम अपनी योजना के अनुसार विदेश जाने के लिए जोधपुर चले गए। जोधपुर रियासत के धानी नामक गांव में एक संत के रुप में धर्म प्रचार करते रहे। साथ में बाहर निकलने की योजना बनाते रहे। उसे एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो ईरान और अफगानिस्तान जैसे देशों की मुस्लिम अदालतों में काम कर सके। कुछ समय बाद उसे सययद जमाल अली खान नाम का वह व्यक्ति मिला। इससे राव तुलाराम की एक समस्या का हल तो निकल गया लेकिन एक दूसरी समस्या का जन्म हो गया। जमाल अली का एक दोस्त था जिसका नाम अहमद अली था। अहमद अली को सभी गुप्त जानकारियां थी। उसने अंग्रेजी सरकार से इनाम पाने के लिए राव तुलाराम की योजनाओं का खुलासा कर दिया। लेकिन राव तुलाराम बहुत ही दूरदर्शी था जब उसे इस बारे जानकारी हुई तो वह बिना समय गवाए वहा से निकल गया।[13]

जून 1859 तक राव तुला राम समझ गया था कि उसको पकडने के लिए अंग्रेज उसका पिछा कर रहे है। ऐसी परिस्थिति में तुलाराम किसी भी गांव में एक रात से ज्यादा समय तक नही ठहरे। वे गांव दर गांव जाते रहे।[14]

इसी समय अंग्रेजों की तरफ से आदेश दिया गया कि जो कोई भी राव तुलाराम को शरण देगा उसे कडा दंड दिया जाएगा। जिसके कारण किसनासर के भुरु, मेहताब और मोती सिंह, मारवाड के हनवंत सिंह, कुण्धु के अनूप सिंह और रोडा के मुहबत सिंह को दंड भी भुगतना पडा।[15]

---

7 कालपी उत्तर प्रदेश के जालौन जिला में स्थित है। यह गांव रेवाडी के उत्तर–पूर्व में लगभग 300 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

8 1857 के नायक, पूर्वोद्वत, पेज न0 44

9 वही

10 फाईल आर/180, पंजाब राज्य अभिलेखागार, पेज न0 27

11 1857 के नायक, पूर्वोद्वत ,पेज न0 44

12 वही
आभीर कुलदीपिका, पूर्वोद्वत, पेज न0 137

13 वही

14 वही

15 आभीर कुलदीपीका, पूर्वोद्वत, पेज न0 138

राव तुलाराम लगभग चालीस दिन बीकानेर के उदयरामसर में रहे। उसके बाद उसने अपने तीन सहयोगियो मान सिंह, ब्रिजलाल और हरसाईं को पैसे लाने के लिए रेवाडी भेजा। ये सहयोगी काफी पैसो के साथ वापिस तुलाराम के पास पहुंचे।[16]

इसी बीच 01 नवम्बर 1858 को ब्रिटिस साम्राज्ञी विक्टोरिया की तरफ से भारत के गवर्नर जनरल को आदेश दिया गया कि सभी राजनैतिक कैदियों को क्षमा कर दिया जाए सिवाय जिन्होने ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या की है।[17]

आदेश के क्रम में राव तुलाराम ने गवर्नर जनरल के पास माफी की एक याचिका लगाई जिस पर वायसराय लार्ड कैनिंग ने 24 दिसम्बर 1858 को जवाब दिया कि वह उसे अपराधी मानते है लेकिन उसे सरकार के रक्षक के रुप मे भी देखा जाता है। उसे माफ कर दिया जाए। लेकिन राव तुलाराम तब तक आत्मसमर्पण करने को तैयार नही थे जब तक माफी का पत्र नही मिल जाता।[18]

तुलाराम के मामले की आगरा के गवर्नर द्वारा गहन जांच में पाया कि उसे आम माफी नही दी जा सकती क्योकि वह विद्रोह के मुख्य नेता रहे है। इसके लिए अनिवार्य है कि उन मुकदमा चलाया जाए। साथ में यह भी कहा गया कि ऐसा तभी किया जा सकता है यदि राव तुला राम आत्मसमर्पण करे। उसको जीवन की पुरी गारंटी दी जाएगी। लेकिन राव तुलाराम ने आत्मसमर्पण नही किया परिणामस्वरुप उनकी याचिका ब्रिटिश सरकार के द्वारा निरस्त कर दी गई।[19]

अब उनके पास देश छोडने के अलावा ओर कोई विकल्प नही था। ई0 1859 के मध्य में वह गंडाला पहुंच गए। गंडाला में कुछ समय रुकने के बाद उसने अपने दल को दो भागों में विभाजित कर दिया। पहले दल में वह स्वयं, उसके परिवार के सदस्य, राम नारायण पुरोहीत, सुख राम, कान्ही राम, तारा सिंह और किसन दरोगा थे। दूसरे दल में सेवा राम, उसके परिवार सदस्य और हर्षाईं थे। दोनों दल मारवाडी व्यारिपारियों के रुप में पातली होते हुए अहमदाबाद पहुंचे।[20] यहां उन्होने एक व्यापार भी किया लेकिन बहुत जल्दी अपने व्यापार को बंद करने का निर्णय किया। यहां उसने अपने सहयोगियों को दो भागों में विभाजित कर दिया। पहले भाग को व्यापार बंद करने और साझेदार अली चंद बोहर के साथ खातों को समायोजित करने का कार्य दिया गया जबकि दूसरे भाग को ईरान जाने वाले जहाज के बारे में सूचना इकठठी करने की जिम्मेवारी दी गई।[21]

राव तुलाराम को जब यह पता चला कि एक महीने के बाद एक जहाज बंबई से बसरा जाने वाला है तो तुरन्त वह अपने कुछ साथियों के साथ अहमदाबाद छोडकर बंबई चले गए। कुछ साथी वही अहमदाबाद मे रुके रहे। उनके बंबई पहुचते ही अहमदाबाद रुके साथियों को एक माह में बंबई पहुचने की सूचना भेजी गईं।[22]

राव तुलाराम को बंबई पहुंचे मुश्किल से एक सप्ताह ही हुआ था। इसी बीच जहाज के कप्तान ने अपनी बंबई रुकने वाली अवधि में कटौती करते हुए तुरंत बसरा जाने का निर्णय लिया। जबकि

16 1857 के नायक, पूर्वोद्वत ,पेज न0 46
17 वही
18 फारसी में लिखा विदेशी पत्र, न0 37, अगस्त 1859
19 1857 के नायक, पूर्वोद्वत ,पेज न0 47
20 वही, पेज न0 48
21 वही, पेज न0 48
22 वही, पेज न0 49

अहमदाबाद वाले साथी अभी बंबई पहुंचे भी नही थे। अब राव तुलाराम के सामने मुसीबत खडी हो गई लेकिन वह अंग्रेजी भय के कारण ई0 1862 मे मारवाडी व्यापारियों के रुप में उस जहाज में सवार हो गए।[23] वह जहाज करीब छह सप्ताह मे बुशयेर पहुंचा।[24]

बुशयेर शहर ब्रिटिश अधिकारियो के नियंत्रण मे था। जब जहाज बुशयेर पहुंचा तब राव तुलाराम को पता चला कि आगे की यात्रा के लिए अगला जहाज तीन से चार सप्ताह बाद जाएगा। वह गिरफतार होने के भय के कारण शहर के बाहर एक मकान किराये पर लेकर रहना शुरु कर दिया।[25]

अभी यात्रियों को बुशयेर पहुंचे दो दिन ही हुए थे। एक गुप्तचर फकीर ने सारे घटनाक्रम की जानकारी ब्रिटिश अधिकारियों को दे दी। अब ब्रिटिश अधिकारी राव तुलाराम के गिरफतार करने की योजना बनाने लग गए। लेकिन इसी बीच एक मराठा सैनिक तुरंत राव तुलाराम के पास आया और ब्रिटिश अधिकारियों के षडयंत्र के बारे में पूर्ण जानकारी राव तुलाराम को दे दी।[26]

राव तुलाराम के लिए अब इस शहर को छोडना मजबूरी हो गई। उसने शहर के राजकुमार के पास एक पत्र लिखा कि हम हिन्दुस्तान से आपकी भूमि पर आए है और हमे तेहरान जाना है जहां हम हिंदुस्तान के मुस्लिम बादशाह जफर के लिए सहायता मांगेंगे। राजकुमार ने पत्र के जवाब में राव तुलाराम को तुरंत शिराज जाने का संदेश भिजवाया। साथ में यह भी कहा गया कि हम आपकी सुरक्षा में कोई सहायता नही कर सकते। अब राव तुलाराम के लिए ओर मुसीबत खडी हो गई और उन्होने तुरंत बुशयेर छोडने का फैसला किया।[27]

राव तुलाराम तेहरान जाने की तैयारी ही कर रहे थे अचानक फिर गुप्तचर फकीर से मुलाकात हो गई । राव तुलाराम ने फकीर की नापाक हरकतों के कारण हाथ पैर बंधवा दिया और मुंह में कपडा भरकर एक दूसरे कमरें में छोडकर शिराज की यात्रा के लिए निकल गए। इसी बीच अंग्रेजी सरकार ने राव तुलाराम के काफीले की जानकारी शिराज पर कार्यरत ब्रिटिश अधिकारियों को दे दी। उनको आदेश दिया गया कि जैसे भी संभव हो तुलाराम को पकडा जाए।[28]

राव तुलाराम शिराज पहुचने के बाद इमामबाडा में एक घर किराए पर लेकर रहने लग गए। यहां उनके पास ब्रिटिश अधिकारियो का संदेश लेकर दो सिपाई पहुंचे। उन्होने तुलाराम को कहा कि हमारे अधिकारी ने आपको बुलाया है और आपसे कुछ आवश्यक जानकारी लेनी है लेकिन राव तुलाराम ने मनाही कर दी। इन सिपाहियों ने ये सब जानकारी अपने अधिकारियों को दे दी। तब अधिकारियों ने चार सिपाई भेजे। जब वे सिपाई राव तुलाराम के पास पहुंचे तो राव तुलाराम ने गेट का दरवाजा बंद करवा दिया और प्रतिक्रिया के लिए अस्त्र शस्त्र तैयार कर लिए। ऐसे नजारे को देखकर चारों ओर लोग इकठठा हो गए। जब इस बारे शिराज के जंमीदार को सूचना मिली तो जंमीदार ने शहर के काजी और कोतवाल को राव तुलाराम के पास भेजा। काजी और कोतवाल ने राव तुलाराम को उनसे बात करने के लिए कहा लेकिन राव तुलाराम ने बात करने की बजाए अपनी सारी कहानी एक कागज पर लिखकर उनके पास

23 आभीर कुलदीपीका, पूर्वोद्वत, पेज न0 139–142
24 1857 के नायक, पूर्वोद्वत ,पेज न0 48
25 आभीर कुलदीपीका, पूर्वोद्वत, पेज न0 141
26 1857 के नायक, पूर्वोद्वत, पेज न0 50
27 वही
28 आभीर कुलदीपीका, पूर्वोद्वत, पेज न0 145

फेंक दी। उनके द्वारा कहानी पढने के बाद राव तुलाराम को विश्वास दिलाया गया कि आपकी सुरक्षा की जिम्मेवारी हमारी है और आप बेझिझज ब्रिटिश अधिकारियों से बात करे।[29]

राव तुलाराम को अपनी सुरक्षा निश्चिंत हो जाने के बाद वह ब्रिटिश अधिकारियों से मिलने के लिए दो सिपाहियों के साथ आगे बढ गया। अभी ब्रिटिश अधिकारी दो किलोमीटर की दूरी पर थे। राव तुलाराम ने अपने सहयोगियों से ब्रिटिश अधिकारियों को सलाम करने के लिए कहा।[30]

राव तुलाराम ने एक कहानी एक पेपर पर लिखी और काजी को सौप दिया गया। काजी वह पेपर अधिकारी के पास ले गया और विश्वास दिलवाया गया कि राव तुलाराम विद्रोही नही बल्कि एक रईस व्यापारी है और व्यापार करने के मकसद से यहा आए है और उनको आगे जाना है। जब अंग्रेज अधिकार इस बात से सन्तुष्ट हो गए कि राव तुलाराम एक व्यापारी है, उनको आगे जाने की अनुमति दे दी।

उसके बाद राव तुलाराम शिराज के गवर्नर से मिलते हुए ईरान के इसफान मे पहुंचें । यहा के गवर्नर ने उनका जोरदार स्वागत किया। साथ में उनको 50 तमन नजार भेंट दी।[31] इसफान में दस दिन रुकने के बाद वह तेहरान के लिए निकल गए। तेहरान पहुचने के बाद उनकी मुलाकात एक अन्य क्रान्तिकारी शहजादा फिरोज से हुई।[32]

शहजादा फिरोज और राव तुलाराम के बीच यहा लम्बी बातचीत चलती रही। उन्होने बताया कि ईरान के राजा अंग्रेजों के खिलाफ है और भारत का समर्थन करते है। लेकिन वे भारत की मदद करने की स्थिति में नही है। इसी बीच उनका दूसरा दल भी उनके पास जा पहुंचा। अब राव तुलाराम तेहरान में ज्यादा समय तक नही रहना चाहते थे। उन्होने फैसला किया कि वे और उनके सहयोगी रशात में जाऐंगे। रशात को राजनयिकों का गढ माना जाता था। यहा पर अनेक देशों के राजनयिक वैश्विक मामलों को लेकर सभाएं करते रहते थे। रशात जाने के लिए उन्होने विदेश विभाग से अनुमति मांगी। उनकी अनुमति स्वीकार कर दी गई और साथ में रशात के गवर्नर को आदेश दिया गया कि राव तुलाराम के साथ एक सम्मानित शाही अतिथि जैसा व्यवहार किया जाए। उसके बाद उनका दल रशात पहुंच गया[33]

रशात पहुंचने के बाद राव तुलाराम ने रुसी राजदूत के साथ मैत्रीपूर्ण और विश्वसनीय सम्बंध विकसित किए। उन्होने रुसी राजदूत के जरीय एक पत्र रुस के जार को भिजवाया। इसके अलावा वह रुसी जनरल से भी मिला और अपने मिशन की असफलताओं के बारे में विस्तार से बताया गया। उन्होने जनरल से सेंट पीटर्सबर्ग जाने के लिए अपनी इच्छा जताई लेकिन जनरल ने कडी सर्दी के कारण उन्हे सेंट पीटर्सबर्ग जाने से मना कर दिया।[34]

रुस मे भयानक सर्दी के कारण वे ई0 1862 में अफगानिस्तान के लिए अपनी यात्रा शुरु कर दी। उनका मानना था कि वे अफगानिस्तान के प्रमुख दोस्त अली मुहम्मद खान के साथ अच्छे सम्बंध विकसित कर लेंगे। दूसरी ओर अफगानिस्तान में बडी संख्या में 1857 के विद्रोही थे जिन्होने काबुल घाटी में सरण ले रखी थी। उन्हे आशा थी कि मुहम्मद खान उनकी पुरी मदद करेंगे।[35]

---

29 1857 के नायक, पूर्वोद्वत ,पेज न0 52
30 वही
31 1857 के नायक, पूर्वोद्वत ,पेज न0 55
32 जंग ए आजादी 1857, पूर्वोद्वत, पेज 431
33 1857 के नायक, पूर्वोद्वत ,पेज न0 55
34 आभीर कुलदीपीका, पूर्वोद्वत, पेज न0 160
35 वही

वे अपने सभी साथियों के साथ कंधार पहुंच गए। यहा उनकी मुलाकात दोस्त अली मुहम्मद खान के साथ हुई। मुहम्मद खान ने उनका जोरदार स्वागत किया लेकिन उनकी मदद करने से इन्कार कर दिया।[36]

कुछ समय बाद दोस्त अली मुहम्मद एक विद्रोह में मारे गए। जिसके कारण उनके राज्य में ग्रहयुद्व छिड गया। परिणामस्वरुप अफजल खान शासक बने लेकिन अंग्रेजों ने उनको हटा दिया। इससे अफजल खान और अंग्रेजों के बीच एक दुश्मनी जैसी स्थिति बन गई। जिसके कारण अफजल खान ने तुलाराम के प्रति सहानुभूति दिखाईं।[37]

अफजल खान ने तुलाराम को कंधार मे एक घर, सेवा करने वाले नौकरों का समूह दे दिया। कंधार में दस दिन रुकने के बाद वह काबुल गए। वहा उनकी मुलाकात वजीर मुहम्मद आशिकी सययद से हुई। राव तुलाराम यहा भारतीयों की खराब हुई स्थिति से इतने परेशान हो गए थे कि उन्होने यहा एक स्कूल खोलने का निर्णय लिया ताकि सययद को उस स्कूल में शिक्षक के रुप में नियुक्त किया जा सके। ई0 1863 के मध्य में राव तुलाराम अपने आप को अस्वस्थ्य महसूस करने लगे क्योकि 1857 की क्रान्ति के बाद का उनका सफर बेहद ही संघर्षपूर्ण, थकाने वाला और चिंतनीय रहा था। वे पेट की एक गम्भीर बीमारी से पीडित हो गए। हांलाकि अमीर ने उनके लिए दो चिकित्सकों की व्यवस्था की लेकिन बहुत प्रयाश करने के बाद भी चिकित्सक उनके जीवन को बचाने में असफल रहे। 23 सितम्बर 1863 को यह वीर लम्बे संघर्षो के बीच और अपने अधूरे सपनों के साथ वीरगति को प्राप्त हो गए।[38]

---

36 जंग ए आजादी 1857, पूर्वोद्वत, पेज 431

37 1857 के नायक, पूर्वोद्वत ,पेज न0 58

38 वही, पेज न0 168

1857 के नायक, पूर्वोद्वत ,पेज न0 59

क्रान्ति दूत राव राजा तुलाराम , अनिल यादव, यादव कुल दीपिका प्रकाशक, दिल्ली, 2007, पेज न0 79